

॥ श्री नारायण नाथ नमो ॥ ॥ श्री नमस्य
साहाये नमो ॥ ॥ प्रह्लाद नारद नारद परासर पुं नुद रिक् ॥
लोत्तम रिष भुक् सौ न क निष् काया ॥ ॥ त क मोग दी जु न व सि व
वि नि ष नाया ॥ ॥ हे तान हं परम भागव तां न मा मि ॥ १ ॥ अ स्था थ ॥
॥ ॥ परा पुं रु रिक् ॥ व्या सां अ म्य रि ष ॥ भु क रौ न क नि ष ॥ प्रा दि
॥ ॥ ग दी अ जु न व सि षु वि नि ष ण आ दि गरि ऐ ति व सि पर म
॥ ॥ न लो म्म ल गरि वि ति ग दी न या ॥ १ ॥

॥ ॥

॥ ॥

2273

॥ सुप्रसिद्धि र कि न ने न ॥ पापं प्रशस्यति वृद्धो दर कि न ले न
 सुप्रसिद्धि र कि न ने न ॥ ॥ मादि सुध उ क ध य ता न भ वं
 ॥ रा अ सा थ ॥ सुप्रसिद्धि र को ना म लि या धर्म क न व र्द्ध हं ॥ मिम
 न को ना म लि या पाप क न ना सहं ह ॥ अर्जुन को ना म स्म र ना ग न्या
 ह को ना सहं ह ॥ ॥ माद्र को ना म लि या पाप को ना सहं ह ॥ ॥ न
 कुल सद् देव को ना न लि रोग को ना सहं ह ॥ ॥ वृद्ध उ वा न ॥ ये मा
 विग रा ग प रा म र शा ॥ ॥ ना रा य न सु र गु र स त त स्म रं ति ॥

ध्या न्य त ते न ह त कि ति ष चै त ना स्ते मा तु प यो ध र र सो न पु न पि
वंति ॥ ३ ॥ सु स्या ५ ॥ उ न्म नु ष्य ले पर म भा ग व त ज्ञा न पा ई । यो मे
मा ल शु सा रा हो सा र भ न्या को लुर भं नु दे व ता को गु रु भ ई र ह न्या ॥
ना रा य न को ना म स य वा र स्म र ना ध्या न ग न्या ॥ क लें ष ड् न्या विज
व न्म सा रि न य को ना स नै के रे फे र मु ह ता रि कोः को ष मा गु भे वा
मु न यो शा दु र य निः पि ञ्च नु प न्या दैन न नि ब्र ह्माले आ जा ग दी
या ॥ ४ ॥ इति श्रुतम् ॥ ना रा य णो नाम नरोत्तमो नरानां प्रसिद्धौ रक

२
॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नवकजन्मांजि पायसं च हरसं वसूति मात्रा केवलं
॥ १ ॥ कोहि मनुष्य त्वद्यो सं स्मरमा प्रसिद्ध भैरव्या को श्री नारा
॥ २ ॥ जो नाम सततानि ले चोनु स का स्मर नागव्या अने कन नममा
॥ ३ ॥ रव्या का पाप सर्व हरन हुं ॥ अरु चिज वस्तु कन चो व्या पाप
॥ ४ ॥ श्री लो गंधः ॥ ततश्च यं चोनु भन्या को नारायण को नाम चोनु जति
॥ ५ ॥ को स्मर केहि छैन ॥ अनि दुइ ले विंति ग दी न नया ॥ ६ ॥ युधिष्ठिर
॥ ७ ॥ मेघ स्या मयित को रोयं वा सं श्री को सु नो ज्ञा सितांगं ॥
॥ ८ ॥

पुण्यो जेत पुं रुरि का यता श्विस्तु व दे सर्व लो कै क नाथ ॥ अथ ॥
॥ १ ॥ न राजस्य श्यामवर्ण न या को त स्माधि पिता मर धोति पहि न्या काः त्मा
॥ २ ॥ धि को स्मर भमनि ॥ मा लाः ला या काः पुं न्या त्मा प प्र को प त्र ज सो न्य
॥ ३ ॥ प्र म या का ॥ श्री लो क्य मा ॥ स व द्या नि को ना ध नै र ह न्याः ॥ ४ ॥ इ स्ता मा हा
॥ ५ ॥ विष्णु कनः नमस्कार भनिः युधिष्ठिर राजा त्व विंति ग दी नया ॥ ६ ॥
॥ ७ ॥ श्री लो क्य मा ॥ ज लो घ म म्मा स न रा व रा ध रा विषा न को त्मा पि ल वि
॥ ८ ॥ प्र मु नो ला ॥ ९ ॥ सु धृ ता जे न वा रा ह र पि नाः स म्य शो यं न ग वा न प्र सि दु
॥ १० ॥ ॥ श्री लो क्य मा ॥ ११ ॥ यो न्या लः स व ज ल म य भै र ह दा मा ॥ १२ ॥ रा ह को य

॥ तारुण्यं नमो नमो नमो नगरिरह न्याना सगर्द ननासि न्या
॥ अथि न वि अचर मुक्ति नैरह न्याः ॥ ऐसा नग वान ले विंति गद्गि न
॥ ६ ॥ **सुर्जुन उवाच** ॥ अचिंत्यः स व्यक्तमन नम व्ययं विभुं प्रभुं न
यत वि अभाव न ॥ श्री लोका विस्तार विः चार कार के हरिं प्रपन्नो स्ति ग
ना हात्मनो ॥ प्रस्था ॥ श्री विष्णु को विन नग नम हा गा क्रो ॥ कला
न त्याग्य ची त्र सु व्यक्तमन नम व्ययं जा हा जा हा ज्या चा हियो ता ही न्या
पित्वा को जम राग नु स न्या ॥ त्रै लो क्य मा वि चार ग न्या विस्तार दे पि न्या

पुन न स ड त्रि क न ग ति दि न्याः ऐ सा हरि क न म ला र् प्राप्ता ह व स न नि
सुर्जु न ले वि ति ग द्गि न्या ॥ ७ ॥ **नकुल उवाच** ॥ यदि गम नम धे सा
काल पा शा नु वं प्र ॥ यदि च कु ल वि हि ने जा म त्प प क्षि वि टे ॥ रु मि त्त
न न पि ग त्वा ध्या य त्प वां त रा त्मा ॥ म म न व त्प ह रि त्प के श व न क्षि ते
का ॥ **स सार्थ** ॥ कौ न म नू यः कौ रौ वे ला मा ग म न ग रि जा दा माः का ता
का ता वे न प्र दा ता दे व वे ला माः म न री सा उ दा माः रु मि की त पं
दे व वे ला माः रु दा माः स सा स सा स्या प र्दा मा ॥ हे दे श व भ नि

विष्णुः शान्तमेव उतु विष्णुः स्थिररुद्रः भैरवः स भनि न कुत ले विंति गर्द
 ॥६॥ सहदेव विष्णुः ॥ तस्य जज्ञवराहस्य विष्णुः तुलते जमः प्र नामं
 ॥५॥ कुलं वंति तेषां मपि नमो नमो ॥ अस्याथ ॥ सह तेज श्री यज्ञमाश्रुतु
 ल तेज ऊन्या विष्णु क न प्र नाम ॥ नमस्कार भनिः सहदेव ले विंति गर्दः
 भया ॥१॥ वृत्तु वाच ॥ स्वकर्म फल निदिष्टा याथां जानि वृजा म्यह ॥
 ते स्यात् तस्याह मि केश त्वं भन्ति ॥ ६६ ॥ सुमे ॥ अस्याथ ॥ प्राफना कर्म
 ल वि चाला गरिक न जौ उ ना जा ठ मा जं हुं न्द त ता सम य मापानि

हे ह्ये केश व भनिति मा ध्यान स्मर नागर्तु ॥ मेरा छाति मा स्थिर भैरवः
 स भनि कंति ले विंति गर्द भया ॥१०॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ कृष्ण रता कृष्ण
 मनुस्मरंति रात्रौ च कृष्ण पुनरु स्थिता यः ॥ ते शिरा देहा प्रविशति कृष्ण
 ल विष्णु धाम ब्रह्म ताह ता स नः ॥ अस्याथ ॥ को हि मनुष्य लेष्कु न को
 नाम सारथ भैरवः ॥ नित्य को नित्य स्मर नागर्तु क न
 तत्ताः सरितः कृष्ण को संग भिन्न हुं दे न क तो न न्या ब्राह्मण ले हो म ग द मा
 न व ग ता ई आहुति दिय को विहि सुमि ले पचा ई आ ग व नै जा दं त सौ हो

[illegible]

राम

तापुन्यवनप्राप्तुं हः श्री कृष्णको. पुनामगत्याले. पुनज नमिषावैत नमि
 सुभद्रालोविंतिगर्जनयाः ॥ १३ ॥ धृष्टमुष्टजवाय ॥ श्रीरामनारायणनवा
 सुदेव. गोविन्दवैकुण्ठमुकुन्दकृष्ण ॥ श्री कृष्णवानतनृसिंहविष्णोमात्र
 हिंससारभुजगदष्टा ॥ अस्याथ ॥ हनारायन. हेवमुदेव. हेगोविन्द. हेम
 कुन्द. हेवैकुण्ठ. हेकृष्ण. हेकेशव. हेनृसिंह. योसंसारमाः शुभकालमा
 कालमर्थलेदरदापरमकरभागग्याजावसूभनिः धृष्टमुष्टलेवि
 तिनमिषावैत ॥ १४ ॥ सुमिसमुजवायः ॥ गोविन्दगोविन्द. हरेनुरारे. गोवि
 गादिनृ. हेनृसिंह ॥ गोविन्दगोविन्दरथांगयात्य. गोविन्दगोविन्द. न

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ हे गोविन्द हे सुकुन्द हे सुरारहे कृष्ण हे गोविन्द हे
गणेश हे गोविन्द ति स्वाक्षर भन्नाः सहस्र कोटि २ नमो स्फाल भनि
प्रभिमन्यु ले विंतिगर्दी भया ॥ १५ ॥ सांति कि उवाच ॥ अथ मेघहरे
विष्णु कृष्ण दामोदर युतः ॥ गोविन्दानं त सर्वे शवासुदेवनमोस्तु ते ॥ राम
॥ अस्माध ॥ हे परमेश्वरः अथाहाः पुनाम भैरह न्या हे हरे हे विष्णु हे
कृष्ण दामोदरः ॥ हे अयुत सर्वात्मको स्वामि हे वासुदेव ति मि क न
वारंवार नमो स्फाल भनि सांति कि ते विंन्दीगर्दी भया ॥ १६ ॥ उवाच उवाच

॥ वासुदेव परित्यज्यं यो रो दे वासुधा सत्यः ॥ तृषितो जाह्नवि ति रे कुपं रव
न ति दुर्मतिः ॥ अस्माध ॥ वासुदेव क न ह डि अरु देवता को पूजाः उपासना
गर्वा श्री कृष्ण दामा जाह्न विगंगा जल मि उ नु छो दि कु वाष नि घा नि कि
दि पि उ न्याः ज स्तो दुर्मति हु नः भनि उ ध्र व ले विंतिगर्दी भया ॥ १७ ॥
हौ मे उवाच ॥ अथासमि वे शयनाश यं न स्थितेः दिवा च रात्रौ च पथा
विप्रताः ले दि सि दि चित्तु सुकृतं कृतं मयाः यथा जना दिन से नु
॥ १८ ॥ अस्माध ॥ जल वा न जि क माः सुत्त दामा वसु दामा चत्ता माः

विष्णुः जगत्पतिः जगत्पतिः तस्यै धर्मः जगत्पतिः नन्दनसंतुष्टः
मानः चोत्तमः विंतिगर्दभयाः ॥ १८ ॥ संजय उवाच ॥ आत्राविप्रेना
साधुलान्मिताद्योरेषु बाधुदिषुवर्तमानाः ॥ संवित् नारायणश्च
मात्रविमृष्टिः उवाच ॥ नो ज्ञेयं न वदन्ति ॥ अस्याथा ॥ दुरवते पीडा भया
का निर्वर्ता यो वनमादेया को व्याघ्रते भयाजस्तो भयत्रासदि
हं यो यत्रासः सर्वे मतिनारायण भानि स्मरनाहं दामात्री सुविभे
नोस्ते ॥ भानि संजय ते विंतिगर्दभयाः ॥ १९ ॥ सुकुल उवाच ॥ अहंस्मि

जगत्पतिः दासः दासः दासः सदा सदा सदा ॥ अथैवैशो जगत्पतिः
नरानां तस्मान्न हं धन्यतरोस्मि लोक ॥ अस्याथा ॥ हे नारायण तिम्रा
दासका दासः तस्यासकापनि दासः हामिदु न पाया मृतस्कार न माधं
न्य २ भंदा कतिम्रा नाम स्मरनागर्नु स का धन्य अन्या का तपा भी
हो भनि प्रकृते विंतिगर्दभयाः ॥ २० ॥ विरात उवाच ॥ वासुदेवस्य ज
भक्त्याः सांतास्तदु त मानसा ॥ तेषां दासस्य दासो हं भवेज न निज
नि ॥ अस्याथा ॥ श्रीवासुदेवकास्य वा भक्तिज श्रेष्ठ गद्गर् सा तज न मनु

पञ्चमः ॥ वरुणः ॥ नृः ॥ इति काशमजन्ममातरमा मङ्गनपाया
वर्षा ॥ तले विंतिगर्द भया ॥ २१ ॥ निष्ठा ॥ उवाच ॥ विपरितोषका
तुम्हात्मा पुनं धुषु ॥ ब्रह्मरूपया हृत्त शरनागतवत्सर ॥ सु
५ ॥ ॥ कालविपरिततु दामाई ॥ मित्र नाई वं धु हि नृ दामा
मताई न सपदा माहे हृत्त मेरो शर नपा ॥ जले लिया जा वर भनि
निष्ठा ॥ विंतिगर्द भया ॥ २२ ॥ डोर नाचा ॥ उवाच ॥ ये ये ह
ती न न चरे न दे ता स्वे लोका नाथे न ज नार्दि न ॥ ते ते गता वि
विह ॥ परि पु याता क्रोधा पि दे व त्थ वरे न तु ले ॥ सु स्या र्थ ॥ ज

॥ ॥ चक्रधारि नारायन लहता ॥ उचं ॥ त्रैलोक्य को नाथ ज नार्दि
ने ॥ ह तर्दि दि न्या कन विह्वु पु रि गयार दे व ता का क्रो ध भ न्या वरु ज
को ह नृ ॥ कति ॥ डोर नाचा ॥ जले विंतिगर्द भया ॥ २३ ॥ रुपा चा ज
॥ ॥ ॥ मन्त्र न न कल मि दं म धु वै नारे म त्या भ नित म ह नु य ह
॥ ॥ ॥ त्व हृत्य पार चार क भ त्थ भ त्थ स्य भ त्थ इति मां स्मर
॥ ॥ ॥ ॥ हे म धु कै तः मे ल न न्म नि स प ल भ या
प र्दि ति मा गु र्द ॥ ॥ ॥ स दे धो व भ न्या प नि ॥ हे लो क ना थ ति मि

गद ॥ २५ ॥ धृतराष्ट्रो जवाच ॥ नमामि नारायणं नाम नायना
नाममि तविक्रमाय श्रीसारंगचक्रसिगदा धरायः नमोस्तुत
पुरषोत्तमाय ॥ अस्याथ ॥ हे कारनमाः वावराग्रवातारलिः वावा
न्यापतिः महतारिभन्यापतिः विष्णुभन्यापतिः द्रव्यहितपतिः भाईव
पुपतिः सरवायपति तपाईस वैथो कः तपा श्रीहो भनिगांधारिले विंति
नरुभया ॥ २७ ॥ दुर्पदे जवाच ॥ यइसायुतगोविन्दमाधवानेन्दकेशवः
कृष्णविष्णुहृषिकेशवाशुदेवनमोस्तुते ॥ अस्याथ ॥ हे यइईशव धनिभै

रहाकायुतगोविन्दमाधवसुनंतकेशव ॥ श्रीकृष्णविष्णुहृषिकेशव
देवतिमिद्वनवारंवारनमोस्कारभनिदुर्पदे जले विंतिगर्दभया ॥ २८ ॥
जयधुधजवाच ॥ नमो कृष्णाय वासुदेवाय ब्रह्मनेन तशक्तयः श्री
गेश्वराय नो गाय त्वा महेश्वर एव गत ॥ अस्याथ ॥ हे कृष्ण भनिनाम
नयाकादेवताः हे ब्रह्म नसुनतमुक्ति ॥ हे जीगेश्वर योगैरहन्वा
तिम्राश्वरनमाः मय्यारः रहनपावसुभनिः नयंडुधले विंतिगर्दभ
या ॥ २९ ॥ विकर्णजवाच ॥ कृष्णाय वासुदेवदिनंदनाय नमः ॥ नंद
गोपवृ ॥ नाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ अस्याथ ॥ हे कृष्ण हे वासु

देव गणे नमः ॥ ज्ञान नदिन्या ॥ हे नन्द का कुमार हे गोविन्द तथा
मन्त्र ॥ नमः प्रम कल्याण नमः सेविश्व भावन ॥ वासुदेवाय शा
नमः ॥ यद्वा नापतय नमः ॥ अथ ॥ हे परमेश्वर प्रल कल्याण क
एगन्याः हे विष्णु सारमासे वैद्य भावनागरा इह न्या हे वासुदेव हे सा
तमति ॥ हे यद्वा वशाकापति भैरव न्यातिमिदन नमः स्कार भानि सो
मदत ले विंतिगर्द भया ॥ ३१ ॥ विराट उवाच ॥ नमो पुलन्य देवाय गो
बालराहिताय च ॥ जगदिताय च दद्याय गोविन्दाय नमो नमः ॥ अथ

हे बालरा हे देव योगि बालन को हितगर्वा यस्त संसार मा हितगर्वा ॥
॥ हे ठुल हे गोविन्द तिमिदन नमो स्कार भानि विराट ले विंति
गर्द भया ॥ ३२ ॥ सत्य उवाच ॥ अतः सिपुष्य संकाश पितवा सप्तसुखि
तं ॥ ये नमस्यति गोविन्द तेषा विद्मते नमः ॥ अथ ॥ हे अतः तः सिपु
ष्य नमो पहे लो वरा भया को वस्तु धीति लगा उन्या हे अतः त ॥ हे
गोविन्द तिमिदन नमो स्कार गन्यादिन नये देहि वाट सा उ नम
निः सलेन्य विंतिगर्द भया ॥ ३३ ॥ वल उवाच ॥ कृष्ण कृष्ण ठ
पालो तौ मगतिना गति मयः ॥ संसारा रा वसगानाः प्रविदु परमेश्व

रं चत्वारः । इति लोसं युक्त भई या केवु हे कृष्ण युगतिदिन्या
मयार न मयार र ह जावन उधार गन्या ॥ हे कृष्ण ति मिहौ भनि
त मयार जे विंति ग उभया ॥ ३४ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ कृष्ण कृष्णेति
कृष्णोपनामा स्मरति नित्यं शान्तं भित्ता यथा पद्म नरकादुधरा
म्वह ॥ अस्याथ ॥ कृष्ण कृष्ण भनि वन जस्पनुषले मेरा ना प्र
मर गि होत स नर कुमादू विरहन्या वन पानि वाट वस
वसल निव सिद्ध त सिन कसारहन्या करण उधार गरंग भनि श्री
श्री दत्त लेखा गागदीनया ॥ ३५ ॥ पुन कृष्ण उवाच ॥ सत्यं ब्रजा

मि मनु जा न्य म मूर्क वाहु यो मां म कुन्द न सिंठ म न्ना द ने न ॥ जितं ज प त्प
नु दिन ते र रा वाः पा प्रा न का यं स द शाय द द मि मि क्ता म ॥ अ स्था र्थ ॥
हे मनु ष्य लो क हा मि जै ल त्प ग रिः अ फ ना हा तं ज न्ना प द्वा रिः श्री कृष्ण ले
आ जा ग र्द म याः ॥ ज स मनु ष्य लेः हे मु कुन्द हे ज न्ना द ने न भ निः अ त का
ल क दा मा भ यो वा र ण स ग्रा म मा भ यो वा नि त्प को नि त्प स्म र ण ग न्ना क
म मे ले अ स य व र द न दि न्ना दु भ निः श्री कृष्ण ले अ फे अ जा ग न्ना
यो ॥ २६ ॥ ई श्व र उ वा न ॥ स क्त नारा य ण पु कु त्वा पु मां क ल्प श त न
पं गंगा दि स व ती धे षु ष्णा तो भ व ति पु त्र कं ॥ अ स्था र्थ ॥ २६ चित्त

तं मन्त्रं पठन्तः शान्तिः स कफैरुभन्याकाः प्ररुपुरवलेः तिनश
 सः ॥ ३७ ॥ गङ्गादि सर्वतीर्थं मास्तानगर्वाका वरो वरः पुन्य
 सः ॥ ३८ ॥ स्मरणा मर्त्या कनः मुक्ती प्राप्नुतुं भनि ईश्वरलेखा
 गदा भया ॥ ३९ ॥ सुत उवाच ॥ तत्रैव गंगा यमुना यतत्र गोदा वरिसिं
 उरसः स्थितिः ॥ सुविनितीर्थानि वसन्ति तत्र यत्रास्य तोदारवथाप
 नागः ॥ अस्याथ ॥ जाहा गङ्गादि यमुना गोदा वरिसिं पुरः मरुस्थिति
 र्वेति ॥ जस्याऽमा परमेस्वर नारायण का कथा हा कहं हनः

तस्याऽमा वरं स्यात् ॥ ४० ॥ सर्वतिर्थं स्यात् ॥ ४१ ॥ भनि सुतनामा पौरस्ती
 ले विंतिगदा भयाः ॥ ४२ ॥ जेम उवाच ॥ नरकं पदे माने तु जे मनं परिभा
 मितं ॥ दितो या नादितो देव केसवः केशनासनं ॥ अस्यार्थ ॥ नर्कको भो
 गः गराऽंदा स्मरणा पुजा गत्या को धनः तस्य समयमा केशव को स्मरना
 मना को धनः भन्या विंति के केशवः ॥ लेक श्लो दुष नास गरि दिंदरः न
 ॥ ४३ ॥ गजं वेदं भनि जमराजा ले विंतिगदा भयाः ॥ ४४ ॥ नारद
 उवाच ॥ अतां बहु सेतु तपो ध्यानं समाधिनां ॥ नराणां दुष्कृ
 तीनां सुकृतीनां पुनाय ॥ ४५ ॥ अस्यार्थ ॥ हजार सहस्र जन्मांतरमा

तथा ~~उक्तं~~ ~~का~~ धर्मः मनुष्यलेः श्री कृष्ण भक्ति स्मरनागत्यादि
तिष्ठेत् ~~यथा~~ ~~मया~~ ~~सह~~ ~~प्र~~ ~~ह~~ ~~ज्जार~~ ~~न~~ ~~म~~ ~~मा~~ ~~त~~ ~~प~~ ~~छान~~ ~~स~~ ~~मा~~ ~~धिका~~
१४ ~~यथा~~ ~~गिरि~~ ~~सह~~ ~~सु~~ ~~ये~~ ~~ये~~ ~~उ~~ ~~ज्जा~~ ~~म्य~~ ~~हं~~ ~~ते~~ ~~ते~~ ~~ते~~ ~~सु~~ ~~ता~~ ~~भक्ति~~ ~~र~~ ~~मिता~~ ~~सु~~
तदा ~~यदि~~ ~~सु~~ ~~स्य~~ ~~ध~~ ~~हि~~ ~~ना~~ ~~थ~~ ~~सह~~ ~~प्र~~ ~~योजो~~ ~~नि~~ ~~मा~~ ~~हि~~ ~~ह~~ ~~मि~~ ~~जा~~ ~~न~~ ~~प~~ ~~दा~~ ~~मा~~ ~~ति~~ ~~मा~~ ~~अ~~ ~~वल~~ ~~भक्ति~~ ~~मे~~ ~~रा~~ ~~मु~~ ~~न~~ ~~नु~~ ~~नि~~ ~~त्र~~ ~~प्र~~ ~~सु~~ ~~त~~ ~~भक्ति~~ ~~ति~~ ~~मि~~ ~~त्र~~ ~~ना~~ ~~म~~ ~~स्मर~~ ~~ना~~
ननु ~~कै~~ ~~के~~ ~~न~~ ~~हु~~ ~~तै~~ ~~र~~ ~~ग~~ ~~नि~~ ~~प~~ ~~दा~~ ~~ले~~ ~~वि~~ ~~ति~~ ~~र~~ ~~दा~~ ~~न~~ ~~या~~ ~~४९~~ ~~प्र~~ ~~दा~~ ~~दौ~~ ~~उ~~ ~~वा~~ ~~न~~ ~~॥~~

॥ या प्रीतिरविवेका नां विषयकमुपासिनी ॥ त्वामनुस्मरन् देव हृदया
नाम स व्युत्तु ॥ अस्यार्थ ॥ अद्यपि को साधु मारत्या काः प्रीतिजसो वि
षयमा मात्री रहं हन ह देव ति म्ना स्मरना मेरा हृदय मा कै हन दुष्टे
सु गानि प्र दाद ले ये र वि ति ग दा भयाः ॥ ४९ ॥ वि श्वा मि त्र उ वा न ॥
॥ कि त्त स्य दा नै कि ति थै कि त्त यो मि किं स धरे ॥ ज्ये नि त्त य ध्या य त्त ये दे
व ना रा य न ज ग त्त गु नः ॥ अस्यार्थ ॥ वत्त दा न ग नु प र्दः कु नु ति थ मा
ह्वा न ग नु प र्दः यथा त प स्या ग नु श्रु को स वा क्य ग नु ज ज्ये नि त्त यो
वि त्त यः श्री ना रा य न भक्ति नाम ति न्या ले के हि दा न ग नु प र्द नः ना रा य

भनि विस्वामित्र ले आजाग दी नया ॥ ४३ ॥
 नि न्योत्सव भवसे पां नित्य श्री नित्य मंगल ॥ य
 गवा र मंगलायत नो हरि ॥ अस्यार्थ ॥ नित्य को नित्य
 दगरे जा आ हृदय मा पर मे स्वर भगु वान् को नाम स्मर नगर्द
 तानु वर सहा क्रम स धै मंगल होला भनि जमद गनी ले आजाग दी
 नया ॥ ४४ ॥ गो त्र उवाचः गो को ति दानं ग्रह नेषु का सि मा द्य
 उयागे युग्म कल्प दारी जशायु त मेर सुव र्ण दान गो विन्द

मस्वर ने न तु ल्य ॥ अस्यार्थ ॥ गाई को ति दान ग न्या का पुं न्य ग्रह न
 मा का सि मा द्य दान ग न्या का पुं न्य कल्प युग सम्प म कर संक्रांति
 उयाग माः प्र हान ग न्या का पुं न्य सु मेरु पर्वत माः सुव र्ण दान ग
 या को पुं न्य रे व वा द गो विन्द भनि स्मरण ग न्या को पुं न्य वरो वर
 ने भनि गो त्र उवाचः गो को ति दानं ग्रह नेषु का सि मा द्य
 गो विन्द तिसदा जप ॥ गो विन्द तिसदा जप
 ने सदा जप की र्त्तन ॥ अस्यार्थ ॥ नृश्वर भन्या का पर व
 त्र गो विन्द नृश्वर गो विन्द ननि उवाच नग नीन ते श्व

वृष्टिं देवतां विदुः वासहोला नमिः शुभो लोविनीगर्द नया ॥

॥ वादरुच्यन उवाच ॥ शुच्युत कल्पवृक्षो सोऽयुनतका

नमो नवा ॥ वितामतिश्च गोविन्द हरिनाम विचित्रतय ॥ सुस्था

१६ २ ॥ शुच्युत भन्या काः कल्पवृक्षजसोऽयुनत भन्या कोः कामव
तुलसेः कसो जन्या तात्पर्ये कल्पवृक्षकोर कामधेनुथैः ज्ञा
नागर्द सो हि दिनसक न्या तस्ये वितामति नदूर ह्या का गोविन्दरं
गिरिनाम मले तस्ये धो कदिनसक न्या तस्य नाम कैः केन धुटेर

नमिः वासहोला नमिः शुभो लोविनीगर्द नया ॥ ४७ ॥ हस्तारिगान ॥ जयंतु

जयंतु देवा देव किं न नो यः जयंतु जयंतु वृक्षो वृक्षी वं सपु

दायः ॥ जयंतु जयंतु मय दस्या मल को मला गजयंतु जयंतु पु

थावि नारना सोऽनुकुं ॥ सुस्थाथ ॥ हे देवति मि वस्ता हो भन्यादे

वतिः कनका नन्द दिन्याः इने का पुत्रति मि वन जय जय ह वर

नमिः वृक्षो वं श का पुदि पतया नी हो भनि वृक्ष कण जय ह व

१७ ३ ॥ हस्तारिगान ॥ जयंतु जयंतु मय दस्या मल को मला गजयंतु जयंतु पु

[illegible]

ब्रह्म ॥ कृष्णेति मंगलं नामः यस्य ब्रह्म पुत्र इति ॥ अस्मी भवंतु तस्याः सु
 गता मातुः कोटयः ॥ पुन्य ॥ कृष्णं ह्यरूपि मंगलं गन्धः नाम जसु का
 पुष्पमा नल दधे तस्माच्छ्रुति प्रापात के नया पनि न स्म होई जा लाभ
 विद्वान्मृतेः शरीरं गदा भया ॥ ५२ ॥ अतः च त्रुष्टवान् ॥ कृष्णाय
 ब्रह्मणे नमः ॥ परमात्मने ॥ प्राणैश्च शान्ता शाय गोविं दाय जसो
 नमः ॥ पुनः ॥ हे कृष्ण हे ब्रह्म देव हे परमात्मा हे गोविन्द अनित्य
 नागरि पुनः मंगलं कर्तव्यं भवतु दुःखं व न ॥ अगदि दिन्या भानि

2273

[illegible]